आज का पुरुषार्थ 6 August 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" संगम युग तपस्या का समय है.. मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति और स्वराज्य अधिकारी की स्थिति को अनुभव करना "*

संगमयुग हम सभी के लिए बहुत ही **कल्याणकारी** है। इस पर ही हम जन्म जन्म की कमाई कर रहे है। यही वह समय है जब हमारे एक एक second का बहुत बहुत ज्यादा मूल्य है।

हमें अपने को check करना है के हम ज्ञान से, सेवाओं से, सम्बन्धों में दुआयें लेकर और योग अभ्यास करके कितने खजाने जमा कर रहे है?

क्योंकि जब खजाने **जमा** करने का समय है तब यदि हम जमा नहीं करेंगे और फिर हमें याद आयेगी जब समय बीत जायेगा तो कुछ भी हमारे हाथ लगेगा नहीं।

अब समय है जमा करने का और समय पहुँच गया है बाँटने का भी। **तो हम इतना जमा कर ले कि सबको बाँट सके।** अगर हमारे पास ही नहीं होगा, तो हम बाँटेंगे कैसे?

जमा करने में हम एक चीज ध्यान में रखें कि .. **अमृतवेले योग** करके हमने जमा किया, मुरली सुन के हमने जमा किया, हमारा अच्छा रहा सबकुछ।

लेकिन सारा दिन **माया** से युद्ध करते, परिस्थितियों से युद्ध करते हमारी शक्तियाँ खतम हो गई। हमने शक्तियाँ नष्ट कर दी। तो हमारा जमा का खाता भी साथ साथ नष्ट हो जाता है।

तो हम अच्छा **योग** भी करे, लेकिन सारा दिन **ज्ञान का प्रयोग** करते हुए, स्वमान का प्रयोग करते हुए खजानों को जमा करते रहे। विशेष रूप से हमें अपनी यह checking करनी ही है।

क्योंकि हमें बहुत खुश रहना है, बहुत **लाइट** रहना है। .... **डबल लाइट** ही डबल ताजधारी बन पायेंगे , यह बाबा ने कहा है।

डबल लाइट .. **मन भी लाइट आत्मा भी लाइट।** आत्मा के स्वरुप में रहना। मन को सारा दिन बहुत हल्का रखना। इससे ही हमारी स्थिति श्रेष्ठ होगी।

अगर ऐसा नहीं है, अगर हम लाइट नहीं रहते, कोई चीज हमें भारी कर देती है, कोई बात आई मन भारी हो गया। आत्मिक स्वरुप की भी विस्मृति हो गई।

तो हमारा जमा नहीं होगा। बल्कि सारा दिन खर्च होता रहेगा। क्योंकि आत्मिक शक्तियाँ तो सारा दिन धीरे-धीरे use होती ही रहती है।

तो हम इस बात पर बहुत ही अच्छी तरह ध्यान देंगे। हमें **स्वराज्यधिकारी** भी बनना है। यह हमारी बहुत सुन्दर **तपस्या** है।

हम अपने को आत्मा देखें। आत्मिक स्वरुप में स्थित होकर, मस्तक सिंहासन पर बैठे ...

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ और राजा हूँ .. स्वयं का राजा "

स्वयं का राजा अर्थात अपने **कर्मेन्द्रियों** का राजा, **संस्कारों** का राजा, मन-**बुद्धि** का राजा, इस **देह** का भी **राजा।**

तो किसी भी चीज़ की हमें अधीनता न हो। सम्बन्धों में भी अधीनता न हो। अगर सम्बन्धों में अधीनता है तो हम राजा नहीं, **स्वराज्य** अधिकारी भी नहीं बन सकते।

इसका बहुत हमें ध्यान देना है। और बाबा जैसा अभ्यास करते थे वही अभ्यास अब हमें भी करना है। और **वह अभ्यास है →**

अपने मन को अपनी बुद्धि को आदेश देना ...

" हे मेरे मन ! अब इधर-उधर भटकना बंद करो "

अपने मन से इस तरह बातें करो। हर व्यक्ति को तो पता है कि उसका मन किस तरफ भागता है। तो उसे भगने से बचायेंगे अच्छी तरह। इस पर बहुत ध्यान देना है।

इसलिए पहले हमें अपने को बहुत अच्छा स्वमान देना चाहिए ...

" मैं स्वयं का मालिक हूँ .. राजा हूँ .. मन बुद्धि का "

क्योंकि तब ही हमारे order पर मन-बुद्धि काम करेगी। अगर हम **राजा** नहीं बने, तो हमारे आदेश को मन-बुद्धि कदापि नहीं मानेगी।

इसलिए बहुत अच्छी अभ्यास की जरूरत है .. " **मास्टर सर्वशक्तिमान और स्वराज्य अधिकारी** " .. इन दोनों की बहुत साधना करना भी हमारी बहुत अच्छी तपस्या है।

अब समय तपस्या का चल रहा है। अपनी तपस्या में यह दोनों तपस्या भी हम जोड़ेंगे। और अपनी स्थिति को बहुत महान बनायेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org